अक्रम यूथ

मार्च 2022 हिन्दी

दादा भगवान परिवार

टीमवर्क

बड़े कार्यक्रमों का आयोजन सफलतापूर्वक करना हो तो उसके पीछे अगर कोई एक बहुत बड़ी शक्ति काम करती है तो वह है, टीमवर्क

अनुक्रमणिका

04 पाँच लोग मिलकर निर्णय लेते हैं तो...

06 ज्ञानी विद् यूथ

08 छोटा लेकिन महत्वपूर्ण

10 टीमवर्क कहाँ नहीं है?

12 टीम में मिलकर काम करने की मास्टर कीज़

13 अटका वहाँ से आगे बढ़ाओ

15 बिगड़ा वहाँ से सुधारो

16 फिल इन द ब्लैंक

18 बुद्धि का कामकाज के सोल्यूशन के लिए...

21 ग्लोबल टीमवर्क

22 कुदरत में टीमवर्क

23 कविता

मार्च 2022

वर्ष : 9, अंक : 11

अखंड क्रमांक : 107

संपर्क सूत्र :

ज्ञानी की छाया में,

त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,

अहमदाबाद-कलोल हाइवे,

मु.पो. - अडालज,

जिला : गांधीनगर-382421, गुजरात

फोन : (079) 39830100

email: akramyouth@dadabhagwan.org

website: youth.dadabhagwan.org

store.dadabhagwan.org/akram-youth

संपादक : डिम्पल मेहता

Printer & Published by
Dimplebhai Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gandhinagar

Owned by : Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gandhinagar

Published at : Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gndhinagar

Printed at : Amba Multiprint
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025. Gujarat.
Total 24 Pages with Cover page

Subscription

Yearly Subscription

India :200 Rupees

USA: 15 Dollars

UK: 12 Pounds

5 Years Subscription

India : 800 Rupees

USA: 60 Dollars

UK: 50 Pounds

In India, D.D. / M.O. should be drawn in favour of "Mahavideh Foundation" payable at Ahmedabad.

© 2022, Dada Bhagwan Foundation.
All Rights Reserved

संपादकीय

प्रिय मित्रों,

क्रिकेट, फुटबाल जैसे खेल में जीतना हो या किसी बड़े प्रोजेक्ट को समय पर पूरा करना हो या किसी बड़े कार्यक्रम को सफलतापूर्वक पूरा करना हो तो उसके पीछे अगर कोई बहुत बड़ी शक्ति काम करती है तो वह है, टीमवर्क। मुझे विश्वास है कि आपने टीमवर्क के बारे में कई बार सुना होगा। सरल भाषा में अगर कहा जाए तो टीमवर्क यानि अलग-अलग कौशल, क्षमता और अनुभव वाले व्यक्तियों द्वारा किसी एक काम को सफलतापूर्वक पूरा करने का साझा प्रयास।

वैसे सुनने में तो यह सरल लगता है लेकिन वास्तविकता में जब टीम में काम करने की बारी आई हो तब मैनेजमेन्ट के इस विशिष्ट साधन का कारगर उपयोग किस तरह करना उसकी विस्तृत जानकारी के अभाव के कारण मनचाहा परिणाम न मिल पाया हो ऐसा आपको अनुभव तो हुआ ही होगा, सही कहा ना? लेकिन इस अंक को पढ़ने के बाद आपको ऐसी कोई परेशानी नहीं होगी क्योंकि हम सब के प्रिय अक्रम यूथ के इस अंक में हम टीमवर्क जैसे मैनेजमेन्ट के एक कारगर साधन के बारे में बात करने जा रहे हैं। लेकिन हाँ, थोड़ी अलग शैली में। यस, कॉन्सेप्ट आधुनिक मैनेजमेन्ट का लेकिन मौलिक समझ ज्ञानी की। यह अनुठी समझ न सिर्फ आपको एक सफल टीम मेंबर बनने में उपयोगी साबित होगी बल्कि आप एक सफल टीम लीडर भी बन पाँएगे ऐसा मुझे विश्वास है।

- डिम्पल भाई मेहता

पाँच लोग मिलकर निर्णय लेते हैं तो...

किंजल, अन्वी, रौनक और विरल, चारों गुमसुम बैठे थे। एक दूसरे से बातें करना तो दूर रहा, वे एक दूसरे के सामने देख भी नहीं रहे थे।

यूथ डेवलपमेन्ट सेमिनार का आज दूसरा दिन था। सेमिनार के मेन संचालक और स्पीकर मिस्टर झाला मॉर्निंग सेशन के लिए हॉल में आए।

"गुड मॉर्निंग ऑल!"

"गुड मॉर्निंग सर!" सभी ने उत्साह से खड़े होकर कहा।

किंजल और अन्वी, दोनों एक-दूसरे की तरफ पीठ करके कुर्सी पर बैठे थे। रौनक और विरल की नज़रें अपने फोन पर गड़ी हुई थीं। चारों ने बात को अनसुना कर दिया।

"मुझे लगता है कि प्रॉजेक्ट का काम जोर-शोर से चल रहा होगा।"

"यस सर, टोटली। आपने चौबीस घंटे दिए थे। नाउ वी ओन्ली हैव टेन आवर्स टू कम्प्लीट!" एक स्टुडेन्ट ने खड़े होकर कहा।

"आज शाम शार्प सात बजे चौबीस घंटे पूरे हो रहे हैं। फिर आप प्रजेन्ट करना। लेकिन एक सरप्राइज है!"

पूरे हॉल में फुसफुसाहट की आवाज़ सुनाई देने लगी। अभी तो इतना काम बाकी है, ऊपर से यह सरप्राइज क्या हो सकता है? सभी को घबराहट होने लगी।

"डोन्ट वरी। प्रॉजेक्ट तो यही करना है। लेकिन इस प्रॉजेक्ट में आपको टीमवर्क, कॉन्सेप्ट और प्रज़ेन्टेशन के पॉइन्ट्स मिलेंगे। और सरप्राइज यह है कि ये पॉइन्ट्स आपके सेमेस्टर के मार्क्स में भी ऐड होंगे!"

"वाउ! अब मज़ा आएगा काम करने का!"

कितना अच्छा है। यदि इसमें अच्छा प्रदर्शन करते हैं तो इग्ज़ैम के लिए उतना टेन्शन कम होगा।"

"ओह नो, अब इसे सिरियसली लेना पड़ेगा।"

सभी का एक्साइटमेन्ट दुगुना हो गया।

"तो फ्रेन्डस... लेट्स गो टू वर्क। तुम सब कॉलेज के सबसे ब्राइट स्टुडेन्ट्स हो इसलिए आइ एम श्योर कि यू विल डू वेल! कोई प्रश्न हो तो डू

आस्क! मैं आस-पास ही रहुँगा।" मिस्टर झाला ने कहा।

सभी जल्दी से अपनी-अपनी टीम के साथ हॉल के कोनों में जाकर बैठ गए और उत्साह के साथ काम शुरू कर दिया।

अन्वी, किंजल, रौनक और विरल, चारों एक ही टीम में थे।

"अब क्या करेंगे?" अन्वी के चेहरे पर सवाल था। प्रॉजेक्ट में काम नहीं करेंगे तो सेमेस्टर में मार्क्स नहीं मिलेंगे, और काम करेंगे तो... चारों एक-दूसरे की तरफ देखने लगे।

"और दोस्तों... कैसा चल रहा है?" मिस्टर झाला को सब कुछ पता था, फिर भी बातचीत शुरू करने के आशय से उन्होंने यह सवाल पूछा।

"सर, क्या हम टीम बदल सकते हैं?" सेमेस्टर को जोखिम में ना डालने के उद्देश्य से किंजल को यह सवाल सूझा।

"नो वे, आपको जिस टीम में रखा गया है उसी के साथ काम करना है। यह हमारी शर्त थी।" मिस्टर झाला टस से मस नहीं हुए।

"तो मैं यह सेमिनार क्विट करता हूँ।" यह कहकर रौनक उठकर जाने लगा। मिस्टर झाला ने उसे रोकते हुए पूछा।

"कोई मुझे बताएगा कि बात क्या है?"

"सर, इट्स नॉट पॉसिबल कि हम चारों एकसाथ काम कर सकें।" विरल ने कहा।

"ऐसा क्यों?" मिस्टर झाला ने अनजान बनते हुए पूछा।

"सर, कल हम ब्रेनस्टॉर्मिंग के लिए बैठे थे। मुझे एकदम सुपर्ब आइडीया आया है। लेकिन ये लोग..." अन्वी ने बात शुरू की।

"रहने दो तुम्हारा सुपर्ब आइडीया। सर, ऑनलाइन मार्केटिंग तो तब हो पाए जब हमारे पास कोई प्रोडक्ट हो। और एक इनोवेटिव प्रोडक्ट का मेरे पास आइडीया है। लेकिन..." रौनक ने अन्वी की बात को कट करते हुए कहा।

"वेल रौनक, प्रोडक्ट के लिए तुमसे भी बेटर आइडीया मेरे पास था, लेकिन तुम सुनो तब ना..." विरल ने गुस्से में कहा।

"रहने दो तुम दोनों। तुम दोनों में विरल का आइडीया शायद अच्छा हो, लेकिन यूनीक नही है और यूज़फुल भी नहीं है। यार, ऐसा प्रोडक्ट क्या बनाना जिसका कोई यूज़ ही ना हो? मेरी मानें तो..."

किंजल अपनी बात पूरी करती उससे पहले रौनक ने बीच में कहा, "मैं सीनियर हूँ, आप लोगों को मेरी बात माननी चाहिए।"

"फॉर योर काइन्ड इन्फॉर्मेशन, मैं मेरी क्लास का रेंकर हूँ।" विरल ने कॉलर ऊँचा करते हुए कहा।

"बॉइस, जो सक्सेसफुल हुए हैं वे सीनियर नहीं थे और रेंकर भी नहीं थे। आइडीया यूज़फुल होना चाहिए।"

"यदि तुम्हें अपना आइडीया छोड़ना नहीं है तो मैं अपने तरीके से मार्केटिंग आइडीया पर अकेला ही काम करूँगा।"

"जाओ, जाओ...वैसे भी मार्केटिंग इज़ नो बिग डील। यह काम तो कोई भी कर सकता है। हं!" रौनक की बात सुनकर अन्वी रोने जैसी हो गई।

देखते-देखते बात इतनी बढ़ गई और सबके मन खट्टे हो गए। सब अपने आइडीया को दूसरे से अच्छा साबित करने में लग गए।

"ओ.के. ओ.के. मतलब प्रॉब्लम यह है कि अभी तक आइडीया ही तय नहीं हुआ है, तो काम तो कैसे होगा?"

"यस सर। कल से हम यहीं स्टक हो गए हैं। आपने कहा कि सेमेस्टर में भी ये मार्क्स ऐड होंगे, तो अब हमें टेन्शन हो रही है कि प्रॉजेक्ट पर काम कैसे आगे बढ़ाया जाए?"

ज्ञानी विद् यूथ

टीमवर्क इज़ द बेस्ट सोल्यूशन

पूज्यश्री : टीमवर्क का मतलब ही है कि सभी संयोग इकट्ठा होकर काम होता है। इसमें व्यक्ति और संजोग, दोनों की ज़रूरत होती है। एक गाड़ी कितने स्पेयर पार्ट्स की बनी हुई होती है? छोटे-बड़े सब मिलाकर 3 से लेकर 4 हजार तक स्पेयर पार्टस होते हैं। इसमें कौनसे पार्ट का महत्व ज्यादा है? बड़े इंजन का या छोटे स्क्रू का?

प्रश्नकर्ता : सभी का।

पूज्यश्री : सभी का। एक स्क्रू गिर गया हो न, तो रेडीऐटर लीकेज हो जाता है, तो पूरी गाड़ी ही रूक जाती है! इसलिए टीमवर्क में किसी भी एक संजोग को मुख्य या फालतू नहीं कह सकते। सभी महत्वपूर्ण हैं, सभी अपनी जगह इम्पॉरटन्ट हैं, सभी को साथ मिलकर काम करना है।

हाँ, इसमें आपका खुद का संजोग कैसा होता है? वन ऑफ द एविडेन्स। कोई भी डिसिज़न लेना हो, 'ऐसा कर सकते हैं' ऐसे अपने आपको वन ऑफ द एविडेन्स के रूप में रखो। फिर सबको अंदर से क्या लगता है वह देखो। सबका मिलकर बेस्ट डिसिज़न आता है।

दादा कहते हैं ना कि, अगर पाँच लोग मिलकर निर्णय लेते हैं तो व्यवस्थित की मंज़ूरी के अनुसार निर्णय लिया कहा जाएगा। फिर काम अच्छा ही होता है! इसलिए, सभी एकसाथ मिलकर, एकता से, सभी के व्यू पॉइन्ट को इनवॉल्व करके निर्णय लेना चाहिए। हमारा आग्रह नहीं होना चाहिए कि 'ऐसा ही होना चाहिए, मैं कहता हूँ वही सही है!' ऐसा नहीं। 'मेरा व्यू पॉइन्ट यह है, सबको क्या उचित लगता है?' सभी को जो उचित लगे उस आधार पर डिसिज़न लिया जाए तो टीमवर्क कहलाता है।

टीम में कोई छोटा नहीं, कोई बड़ा नहीं, सबका फुल इनवॉल्वमेन्ट। फिर भी कोई बॉस नहीं और कोई सबॉर्डिनेट नहीं। सभी को इनवॉल्व कर के जो उचित लगे वह डिसिज़न लेना चाहिए।

इस वर्ल्ड में हर एक चीज़, मशीन के पार्ट्स में एक छोटा सा स्क्रू भी इम्पॉरटन्ट होता है। बेरिंग, मोटर,

शाफ्ट, सभी पार्ट्स इम्पॉरटन्ट हैं, लेकिन छोटे से स्क्रू का भी इम्पॉरटन्स कम नहीं है। वह ना हो तो काम बिगड़ सकता है।

आज के यूथ को इतना समझना चाहिए कि, **किसी भी संजोग को डिवैल्यू मत करो।** यह अडालज सेन्टर बना, तब शेरथा की एक बहन ने नीरू माँ से कहा था कि, "नीरू माँ, गांधीनगर और अन्य दूसरी जगह ज़मीन ढूँढने के बजाय अडालज की तरफ आइए न! यहाँ बहुत ज़मीनें खाली पड़ी हैं।" नीरू माँ ने कहा कि, "अडालज कहाँ है? चलो, वहाँ ढूँढ़ते हैं।" बोलो, एक छोटा एविडेन्स भी कितना महत्वपूर्ण साबित हुआ! आज यहाँ पूरी सीमंधर सीटी बनी और हज़ारों लोग इस सत्संग का, ज्ञान का, त्रिमंदिर का लाभ उठा रहे हैं!

नीरू माँ एविडेन्स को देखते थे, एविडेन्स का आदर करते थे। किसी भी बात के लिए अपना मंतव्य, अपना चलन, अपना कंट्रोल या आग्रह नहीं रखते थे। एविडेन्स क्या कहते हैं, सभी क्या कहते हैं?

और इस तरह काम करने से सबके मन का समाधान होता है, सबको संतोष होता है। और सभी को इनवॉल्व करके जब काम करते हैं तो बेस्ट रिज़ल्ट आता ही है। समझ में आया ना?

छोटा लेकिन महत्वपूर्ण

प्रोडक्शन मैनेजर टेक्निकल और मिकेनिकल इंजीनियर्स की इमर्जन्सी मीटिंग बुलाते हैं।

दूध उत्पादन इकाई के सभी इंजीनियर्स मशीन और सिस्टम की जाँच कर रहे हैं।

पाठक मित्रों, आप इस अधुरी कहानी को पूरी करो। आगे क्या हुआ होगा? मशीन ठीक हुई या नहीं? अगर हुई तो कैसे?

....

....

....

....

टीमवर्क कहाँ नहीं है?

यदि एक LED ऑन हो तो किसी को दिखाई नहीं देगा। लेकिन एक-एक करके हजारों छोटी-छोटी LED एक साथ ऑन की जाएँ तो लोगों की आँखें चौंधिया जाए इतना प्रकाश दे सकती हैं!

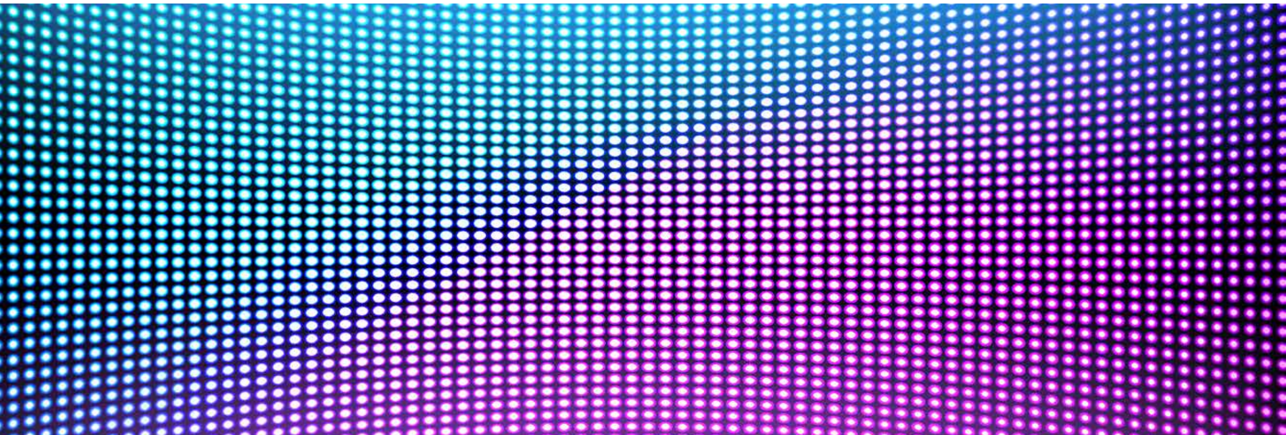

म्यूज़िक आर्केस्ट्रा में हारमोनियम, तबला, ढोल, खंजरी, बाँसुरी, मंजीरा जैसे बहुत सारे वाद्य यंत्र एक साथ सुर और ताल में बजते हैं तब जाकर मधुर संगीत उत्पन्न होता है।

हमारे देह में तो पूरा टीमवर्क ही होता है। पैरों से लेकर सिर तक, आँखें, जीभ, कान, हाथ सभी पूरे दिन कोऑर्डिनेशन से काम करते हैं। भगवान की पूजा-आरती करते समय दाहिना हाथ पूजन, तिलक वगैरे करता है और बायाँ हाथ सिर्फ थाली पकड़कर खड़ा ही रहता है। लेकिन बायाँ हाथ कभी दुःखी नहीं होता कि “मैं कभी पूजा नहीं कर पाऊँगा?”

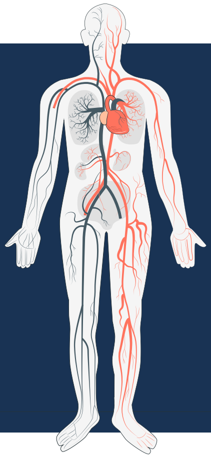

किसी भी बड़ी कंपनी में कई डिपार्टमेन्ट्स होते हैं जैसे कि परचेस, उत्पादन, मार्केटिंग, सेल्स, अकाउन्ट, डिस्ट्रीब्युटर, रिटेलर आदि। हर डिपार्टमेन्ट की कई टीम होती हैं, टीम के हेड होते हैं, उनके अधीन काम करने वाले लोग होते हैं। ये सभी मिलकर काम करते हैं तब जाकर प्रोडक्ट पब्लिक तक पहुँचता है।

टीम में मिलकर काम करने की

मास्टर कीज़

अटका वहाँ से आगे बढ़ाओ

(ज्ञानी आश्चर्य की प्रतिमा)

एक बार नीरू माँ के साथ महात्माओं की साउथ इन्डिया यात्रा का आयोजन हुआ था। नीरू माँ और सभी महात्मा ठहरने के स्थान पर पहुँच गए थे। लेकिन किचन की वैन अभी तक पहुँची नहीं थी, जिसमें रसोई का सब सामान, बरतन, सब कुछ था। जाँच करने पर पता चला कि गाडी पंक्चर हो गई है और वह रास्ते में ही अटक गई है। गाड़ी की राह देखना ही था। समय गुजारने के लिए नीरू माँ ने महात्माओं को गरबा करने को कहा।

काफी समय बीतने के बाद भी गाड़ी नहीं आई। नीरू माँ को समाचार मिले कि किचन वैन समय पर नहीं पहुँच पाएगी। तब नीरू माँ को सबसे पहला विचार यह आया कि शाम को महात्माओं को खिलाएँगे क्या?

उन्होंने तुरंत ही दो बहनों को बुलाकर कहा कि, "किचन वैन रास्ते में ही अटक गई है। अब हमें ही शाम के खाने की तैयारी करनी पड़ेगी। खाना बनाने के लिए एक जगह ढूंढ लो। आज महात्माओं के लिए कढ़ी, खीचड़ी और आलू की सब्जी बनाना।"

फिर नीरू माँ ने एक आप्तपुत्र भाई को बुलाकर कहा, 'तुम बाजार जाकर दाल, चावल, आलू, दही, बेसन का आटा, मसाले सब लेकर आओ। और आस-पास के होटल वालों को पूछो कि वे अपने बरतन हमें देंगे क्या? हम उसका किराया दे देंगे।' फटाफट सब तय करके दो-चार बहनों-भाईयों को काम सौंप दिया। दूसरे महात्माओं को इसका पता भी नहीं चला।

इस प्रकार देखते ही देखते विरान जगह पर भी नीरू माँ ने बड़ी सी रसोई खड़ी कर दी! डेढ़ घंटे में खाना बनकर तैयार हो गया और नीरू माँ ने सभी महात्माओं को प्रेम से खिलाया।

गजब है नीरू माँ की सूझ! ऐसी परिस्थिति में भी कितना सुन्दर सॉल्यूशन ला सके। **"अटका वहाँ से आगे बढ़ाओ!" का प्रत्यक्ष उदाहरण ही देख लो।**

बिगड़ा वहाँ से सुधारो

सचमुच देखा जाए तो अन्य सभी शहरों की तुलना में मुंबई हमेशा चैलेन्जिंग रहा है। और अगर यहाँ कोई भव्य इवेन्ट करना हो तो ग्राउन्ड का किराया भी बहुत एक्सपेन्सिव होता है और ग्राउन्ड भी छोटे-छोटे होते हैं इसलिए उतारा, भोजनशाला, सत्संग हॉल, सब अलग-अलग ग्राउन्ड में रखना पड़ता है। साथ ही ट्रान्सपोर्टेशन और महात्माओं की सेफ्टी का भी ख्याल रखना पड़ता है। फिर, मुंबई में तो जन्म जयंती के साथ त्रिमंदिर प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव भी था। इसलिए तैयारी करने में ही बहुत सारे चैलेन्जेस थे। फिर भी मुंबई के महात्माओं ने हिम्मत नहीं हारी। जैसे ही ग्राउन्ड रेडी करते कि बारिश गिरती, इसलिए फिर से सब कुछ सेट करना पड़ता। ऐसा करते-करते अंत में सब तैयार हो ही गया।

इवेन्ट की शुरुआत अच्छी रही। मुझे याद है कि ओपनिंग सेरमनी में सांस्कृतिक कार्यक्रम चल रहा था तब जोरदार बारिश शुरू हो गई थी। स्टेज पर पानी गिर रहा था। यह देखकर पहले तो ऐसा लगा कि कार्यक्रम में कोई स्पेशल इफेक्ट डाला गया है। फिर रियलाइज़ हुआ कि यह तो सचमुच में बरसात का पानी है। सबको लगा कि अब सब खत्म! कुछ नहीं

मुझे याद है कि ओपनिंग सेरमनी में सांस्कृतिक कार्यक्रम चल रहा था तब जोरदार बारिश शुरू हो गई थी।

हो सकता।

बारिश तो बंद हो गई, लेकिन ठ्हरने की जगह में इतना पानी भर गया था कि वहाँ फिर से ठ्हरने के लिए टेन्ट नहीं बाँधे जा सकते थे। हमने दो-तीन ग्राउन्ड्स में महात्माओं के ठहरने का इंतज़ाम किया था, उन हजारों महात्माओं को रातों-रात दूसरी जगह शिफ्ट करना था। इट वॉज़ इम्पॉसिबल। लेकिन यह दादा की कृपा ही थी कि सभी को ठहरने के लिए जगह मिल गई। होता ऐसा कि सुबह से ठहरने के लिए जगह ढूँढ़ना शुरू करते तो कोई सुबह 9 बजे मिलती, कोई 10 बजे, कोई दोपहर में 3 बजे और कोई शाम 5 बजे। लगभग 15-20 जगह मिली होंगी। जैसे-जैसे जगह मिलती जाती वैसे-वैसे दो सौ-पाँच सौ-हजार माहात्माओं को शिफ्ट करते जाते। पूरी रात महात्माओं को सोने नहीं मिला हो, खाने का ठिकाना भी पड़ा हो या नहीं, कपड़े गीले हों, ठहरने की जगह के लिए राह देखनी पड़ी हो, फिर भी सभी ने तप किया। ऐसा अगर किसी दूसरे कार्यक्रम में हुआ होता तो चीखना-चिल्लाना, हाथापाई, हल्ला हो जाता लेकिन सभी महात्मा स्थिरता में थे। कोई फरियाद नहीं, कोई नेगेटिव नहीं। सभी असीम जय-जयकार कर रहे थे। हर एक महात्मा को ऐसा था कि अपने दादा की जन्म जयंती है। किसी भी प्रकार इन संजोगों को पार करेंगे, जन्म जयंती होनी ही चाहिए

लोगों को सलामत जगह पहुँचाना, ग्राउन्ड में से बारिश का पानी निकाल कर उसे सूखाना, फिर से डोम खड़े करना, जिसको जो काम सूझा वो काम करने लगा।

और होगी ही!

उस समय छोटे बच्चों से लेकर बड़े, सभी महात्मा और संकुल के सभी भाई-बहन ने दिन-रात काम किया था। "इट वॉज़ लाइक ए वॉर"! महात्माओं के सामान को गीला होने से बचाना, शार्ट सर्किट होने से बचाना, इलेक्ट्रॉनिक सामान बचाना, लोगों को सलामत जगह पहुँचाना, ग्राउन्ड में से बारिश का पानी निकाल कर उसे सूखाना, फिर से डोम खड़े करना, जिसको जो काम सूझा वो काम करने लगा। वॉर में कैसा होता है कि आप कह नहीं सकते कि कौनसा काम किसने किया। बस, सभी का एक ही लक्ष्य था कि किस तरह सब कुछ ठीक हो जाए। जो बिगड़ा उसे सुधारने में सेवार्थियों ने दिन-रात सेवा की।

सबका सहकार था, सबकी ओनरशीप थी इसलिए कई विघ्न आने के बावजूद भी जन्म जयंती और प्राण-प्रतिष्ठा, दोनों महोत्सव मना सके। इस जन्म जयंती के बारे में जितना सोचा था उससे भी अधिक उत्साह और ऐडवेन्चर के साथ यह मनाई गई।

-मुंबई सेवार्थी

फिल इन द ब्लैंक

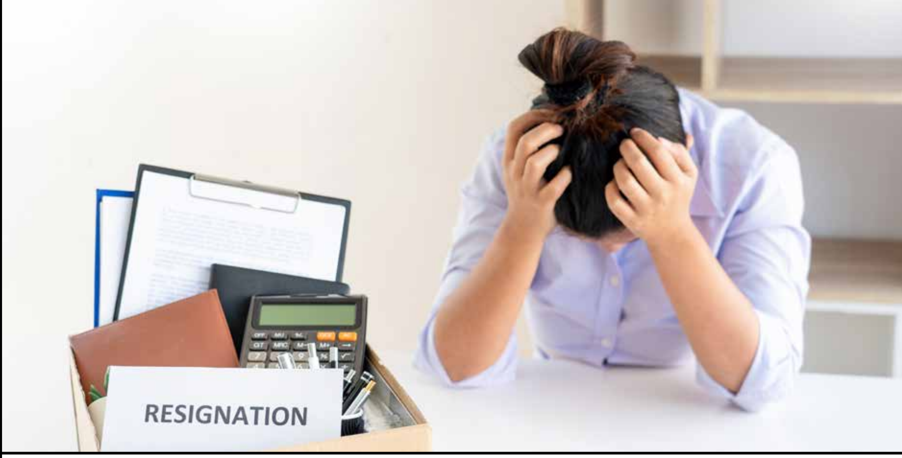

अवनी ने मि. शाह के टेबल पर रेज़िग्नेशन लेटर रखते हुए कहा, “सर !! आइ एम सॉरी, मैं इस टीम के साथ अब और काम नहीं कर सकती।”

मि. शाह ने अवनी की तरफ देखा। हमेशा हँसमुख और एनर्जेटिक रहने वाली अवनी के चेहरे पर आज एक अलग प्रकार की परेशानी थी। कुछ भी समझ में ना आने पर मि. शाह ने धीरे से अवनी से कहा, “प्लीज सिट।”

अवनी सर के सामने वाली चेयर पर बैठ गई। रेज़िग्नेशन लेटर पर एक नज़र डालकर मि. शाह ने पूछा, “यह क्या अवनी!! तुमने अचानक कंपनी छोड़ने का डिसिज़न ले लिया! तुम्हें कुछ प्रॉब्लम हो तो हम डिस्कस कर सकते हैं।”

अवनी बैचेन थी। उसे कुछ और कहना या सुनना नहीं था। उसने इतना ही कहा, “बस सर! मैं इस ऐटमॉस्फियर में सेट नहीं हो पाऊँगी।”

“अवनी,” मि. शाह ने बहुत प्रेम से कहा, “आज तक कंपनी में तुम्हारा परफार्मेन्स बहुत अच्छा रहा है। तुम यह कंपनी छोड़कर जाओगी इसमें तुम्हारा नहीं बल्कि कंपनी का लॉस है। और मुझे हमेशा यह दुःख रहेगा कि मैं अपने जुनियर्स को संभाल नहीं सका।”

“सर, मेरे मन में आप के लिए कुछ नहीं है लेकिन...” कहते हुए अवनी रूक गई।

“लेकिन क्या? ... फील फ्री टू स्पीक। वी विल डेफिनेटली कम आउट विथ सम पॉज़िटिव सोल्यूशन।” मि. शाह ने उसे कम्फर्टेबल फील कराते हुए कहा।

“सर, यह टीम ही अनफेर है। श्रुति मैम ने आरव और ईशान को नये प्रोजेक्ट का लीडर बनाया है। और इन दोनों को इसका कोई अनुभव ही नहीं है। अभी तक सबसे ज्यादा काम मैंने और राधिका ने किया है। लेकिन श्रुति मैम उन दोनों का ही व्यू कन्सिडर करती हैं। हमारी तकलीफ बताने पर अनसुनी कर देती हैं। इस नये प्रोजेक्ट में भी सब कुछ मेरे और राधिका के सिर पर ही आएगा। आइ फील वेरी फ्रस्ट्रेटेड। ऐसे भी कभी टीमवर्क होता है? हमारे पास भी एक्सपिरियन्स है। देन हाउ कैन शी इग्नोर अस? जहाँ हमारे काम की कदर नहीं वहाँ मुझे काम नहीं करना है, बस!”

अवनी राजधानी एक्सप्रेस से भी फास्ट स्पीड में बोले जा रही थी।

“ओह, तो आरव और ईशान कुछ नहीं करते?” मि. शाह ने धीरे से पूछा।

“मतलब वे लोग सिर्फ फील्ड ट्रिप करते हैं, बाकी के सारे काम हम ही करते हैं।”

मि. शाह ने कहा, “अवनी, क्या तुम्हें पता है कि इस कंपनी में सीनियर मैनेजर की पोस्ट तक मैं कैसे पहुँचा? वुड यू लाइक टू नो माइ जर्नी फ्रोम ऐडमिन पर्सन टू सीनियर मैनेजर?”

कोई भी रिज़ाइन करते समय लाइफ स्टोरी सुनने

के मुड में नहीं होता। लेकिन पता नहीं क्यों मि. शाह की बात में अवनी को दिलचस्पी हुई, "श्योर सर!" उसने क्युरीयोसिटी से कहा।

मि. शाह अपनी चेयर पर रिलेक्स होकर बैठ गए। ग्लास में से पानी पिया और एक गहरी साँस लेकर कहना शुरू किया, "अवनी, जब मैं मैनेजमेन्ट की पढ़ाई कर रहा था तब हमारे सर ऑलवेज़ 'फिल इन द ब्लैंक्स' एक्सरसाइज़ करवाते थे। एक बार ऊब कर मैंने सर से पूछा, "सर, यह तो स्कूल में बहुत पढ़ा है। मैनेजमेन्ट में भी यही है? इज़ देयर एनी कनेक्शन बिटवीन मैनेजमेन्ट ऐन्ड फिल इन द ब्लैंक्स?"

सर ने कहा, "यस, ये फिल इन द ब्लैंक्स का कॉन्सेप्ट लाइफ के हरेक फ़ेज में बहुत काम आता है।"

फिल इन द ब्लैंक्स मतलब खाली जगह भरना। लेट्स से, गणित का एक सवाल कम्प्लीट करने के लिए वन टू टेन नम्बर्स जरूरी हैं। मेरे पास 1,2,3,4 नंबर्स हैं। तुम्हारें पास 5,7,10 और राधिका के पास 6,8,9 हैं। तो क्या करना चाहिए?

"मैं और राधिका आपके नंबर्स में हमारे नंबर मिला दें तो हो गए दस, सिम्पल।" अवनी ने तुरंत जवाब दिया।

राइट! फिल इन द ब्लैंक्स का मतलब है, बड़ा-छोटा, कम-ज्यादा देखे बिना जहाँ खाली दिखे, कमी दिखे, ज़रूरत दिखे, वहाँ चुपचाप जॉइन हो जाना और सपोर्ट करना। जब तुम लोगों को ऐसा करना आ जाएगा तब तुम लोग किसी भी काम को अच्छे तरीके से मैनेज कर सकोगे। बिकॉज़ ऐसा करते समय कभी तुम्हें लीडर बनना पड़ेगा, कभी डबल काम करना पड़ेगा, तो कभी काम में बैक सीट लेनी पड़ेगी, कभी अकेले काम निपटाना पड़ेगा, तो कभी काम को बाँटना पड़ेगा। और ऐसा करने से तुममें जो फ्लेक्सिबिलटी आएगी उससे फास्ट प्रोग्रेस होगा।"

मि. शाह थोड़ा रूके। उन्होंने अवनी की तरफ देखा।

"इंटरेस्टिंग... समथिंग न्यू सर।" वह बोली।

"अवनी, मैंने इतने साल कंपनी में इसी तरह काम किया है। मेरे व्यूज़ कन्सिडर किए जाएँ या रिजे़क्ट किए जाएँ, मुझे प्रमोशन मिले या ना मिले, मेरे अकेले के हिस्से में चार लोगों का काम आए, या मेरा काम किसी और के पास चला जाए और मैं खाली रहूँ, लेकिन प्रोजेक्ट में मैं सभी को फुल सपोर्ट करता था। और इस क्वालिटी के कारण मैं इस कंपनी में बेस्ट टीम प्लेयर के रूप में फेमस हो गया। आज इसी क्वालिटी ने मुझे सिनियर मैनेजर की पोस्ट पर बिठा दिया है। एक-दूसरे के पूरक होकर काम करना वह टीमवर्क की सफलता का सिक्रेट है।"

मि. शाह ने बात पूरी करते हुए पानी पिया। अवनी के चेहरे पर एक बड़ी स्माइल थी। वो तुरंत खड़ी हुई, और जाने के लिए मुड़ी।

"कहाँ जा रही हो अवनी?" मि. शाह ने पूछा।

"मेरे प्रोजेक्ट की ब्लैंक्स फिल करने सर।" और अवनी हँसते हुए कैबिन के बाहर निकल गई।

बुद्धि का कामकाज के सोल्यूशन के लिए उपयोग करें, व्यक्ति के लिए नहीं।

चीफ इंजीनियर साहब राउन्ड पर आते हैं। महंगी स्टेनलेस स्टील की प्लेट की कटिंग देखते हैं।

चीफ इंजीनियर (मन में) : ओह, लगता है गलत प्लेट कट गई। इसकी थिकनेस 10 मिमी के बदले 12 मिमी की है।

बुद्धि का व्यक्ति के लिए उपयोग करते है तब...

चीफ इंजीनियर : यह किसने किया ? फ्लोर इंजीनियर कहाँ है? बुलाओ उसे!

(साहब की आवाज सुनकर सब लोग इकट्ठा हो गए।)

फ्लोर इंजीनियर : सर! यह प्लेट मैंने कट की थी।

चीफ इंजीनियर : तुम्हें समझ में नहीं

बुद्धि का कामकाज के लिए उपयोग करते है तब...

चीफ इंजीनियर ने कुछ भी नहीं कहा चक्कर लगा कर चले गए । बाद में फ्लोर इंजीनियर को शांति से बुलाया।

चीफ इंजीनियर : इसका ड्रॉइंग निकालिएगा तो। कौन सी साइज़ का कट करना है?

(फ्लोर इंजीनियर ड्रॉइंग बताते हुए)

फ्लोर इंजीनियर : 10 मिमी का । ओह! सॉरी सर! लगता है मुझसे भूल हो गई है!

आता? पाँच लाख का नुकसान कर दिया!

फ्लोर इंजीनियर : स...स...सॉरी सर!

चीफ इंजीनियर : क्या सॉरी? पूरी प्लेट वेस्ट हो जाएगी। तुम जैसे लोग ध्यान नहीं रखते इसलिए ही... चले जाओ मेरे सामने से। कल से अपना मुँह मत दिखाना।

फ्लोर इंजीनियर : लेकिन सर?

चीफ इंजीनियर : आइ सेड गेट आउट!

(फ्लोर इंजीनियर उदास होकर सिर झुकाकर चला जाता है।)

पीछे लोग फुसफुसा रहे हैं।

"गलती तो होती है। इसमें इतने अच्छे इंजीनीयर को निकाल देना चाहिए?"

चीफ इंजीनियर : हम्म... अब क्या कर सकते हैं?

फ्लोर इंजीनियर : यह प्लेट तो काम नहीं आएगी। हमारे पास नई प्लेट भी नहीं है। बट... सर मेरा एक फ्रेन्ड है, उसके पास से अर्जेन्टली प्लेट मिल सकती है। पहले उससे प्लेट मंगवा कर काम पूरा करते हैं, फिर इस प्लेट का कुछ सेटिंग करेंगे।

चीफ इंजीनियर : मंगवा लीजिए, और इसको होल्ड पर रखिए। मैं देखता हूँ इसका क्या किया जा सकता है। (कहकर वे जाने लगते हैं)

फ्लोर इंजीनियर : रियली सॉरी सर, आज के बाद कंपनी का इतना बड़ा नुकसान कभी नहीं होगा।

पीछे लोग फुसफुसाते हैं।

"साहब के ऐसे स्वभाव के कारण ही हम जिंदगीभर के लिए इस कंपनी के प्रति वफादार रहेंगे।"

पूज्यश्री : दादाश्री कहते हैं कि बुद्धि का उपयोग हमेशा काम के निर्णय के लिए ही करना चाहिए। किसी दूसरी तरह या दूसरों के लिए नहीं।

नीरू माँ ने भी कहा है कि बुद्धि का उपयोग व्यक्ति के लिए नहीं करना, बल्कि कामकाज के सोल्यूशन के लिए ही करना।

'एडजस्ट एवरीव्हेयर' भी यही समझाता है कि एक-दूसरे के पूरक बनकर काम करो। अटका वहाँ से आगे बढ़ाओ, बिगड़ा वहाँ से सुधारो। बुद्धि का उपयोग कामकाज के सोल्यूशन के लिए करो और ज्ञान से सभी को निर्दोष देखो, शुद्धात्मा देखो और अकर्ता देखो।

यदि ऐसी सेटिंग करके सेवा का काम करेंगे तो सेवा में सिन्सियरिटी रह सकेगी और सेवा का काम भी बढ़ता रहेगा और मोक्ष के लिए हमारी प्रगति में भी कोई रूकावट नहीं आएगी। इसके बदले 'मैं ही करूँगा', 'वह गलत करता है', 'वह ठीक से नहीं करता', 'उसे यहाँ से हटाओ', यह सब व्यक्ति के लिए बुद्धि का प्रयोग किया कहा जाएगा। इससे सिन्सियरिटी टूट जाती है। हम जो हर्टिली सेवा करना चाहते थे, उसमें यह दख़ल हुई कहा जाएगा।

इस बुद्धि को पहचान कर कहना चाहिए, "ऐ बुद्धि! तुम यहाँ इतना ही काम करो।" जैसे नौकर के पास से साफ-सफाई जैसे कुछ ही काम कराने चाहिए, इसी तरह बुद्धि का प्रयोग भी सिर्फ कामकाज के सोल्यूशन के लिए ही करना चाहिए।

कामकाज का सोल्यूशन यानी क्या? रसोई में दाल ठीक से नहीं बनी तो, "किसने बिगाड़ी?", "ध्यान क्यों नहीं रखा?" यह चर्चा करने के बदले "अब क्या हो सकता है?" इस बारे में सोचकर आगे का काम शुरू कर देना चाहिए। "जल्दी से पतीला उठाओ, ऊपर से दाल ले लो, नीचे की जली हुई दाल को एक तरफ रखो। दूसरे पतीले में दाल को डाल दो और उसमें लोंग, इलाइची सब डालो जिससे जला हुआ टेस्ट नहीं आए और दाल को इस्तेमाल कर लो। और पचास-सौ लोगों के लिए दूसरी दाल चढ़ा दो।" इसे सोल्यूशन किया कहा जाएगा। समझदार इंसान ऐसा करता है। और ज्ञान की दृष्टि तो हमारे पास है ही कि व्यवस्थित ने बिगाड़ा है।

चीज-वस्तु के लिए बुद्धि का प्रयोग करना है, व्यक्ति के लिए बुद्धि का प्रयोग ना करें।

चीज़-वस्तु की तुलना में व्यक्ति ज्यादा कीमती हैं। इसलिए किसी भी व्यक्ति का दिल मत तोड़ना, काम की महत्ता के सामने।

ग्लोबल टीमवर्क

कोरोना पैन्डेमिक, जिसने देखते ही देखते पूरी दुनिया को रोक दिया था।

दिसम्बर 2019 में शुरू हुई यह महामारी मार्च 2020 तक सभी देशों में फैल गई। और 2020 का साल इतिहास में एक ऐसा साल बन गया जब जीवन जीने का तरीका ही बदल गया था। नौकरी, धंधा, स्कूल, कॉलेज, पार्टी, पिकनिक सब कुछ बंद! घर के बाहर निकलना और किसी से मिलना सब बंद। ऐसी परिस्थिति में सबसे बड़ा प्रश्न यह था कि इस रोग से कैसे बचें? फैमिली मेम्बर्स का इलाज कहाँ करवाना? और कुछ लोगों के सामने इससे भी कठिन प्रश्न था कि कमाई किस तरह की जाए? घर कैसे चलाएँ? जीवन की रोजमर्रा की ज़रूरत का सामान कहाँ से लाएँ और क्या खाएँ?

तब उस रूके हुए जीवन को आगे बढ़ाने के लिए पूरी दुनिया एक हो गई।

देश-विदेश के रिसर्चर्स दवाओं और वैक्सिन की खोज़ में लग गए। डॉक्टर और नर्स से लेकर हॉस्पिटल का पूरा मेडिकल स्टाफ अपनी परवाह किए बिना दिन-रात मरीजों की सेवा में लग गए। इस दावानल जैसे रोग को फैलने से रोकने के लिए देश-विदेश की सरकारों ने लॉकडाउन और सोशल डिस्टेन्सिग की अपील की। हॉस्पिटलों में बेड से लेकर ऑक्सिज़न सप्लाइ को बढ़ाया गया। पुलिस और आर्मी अपनी जान को जोखिम में डालकर लोगों को समझाने के लिए आगे आए। फायर ब्रिगेड और सफाई कर्मचारी सेनेटाइजेशन के काम में लग गए। गरीब और बेरोजगार लोगों को फूड पैकेट और किराने का सामान पहुँचाने के लिए कितने ही लोग और संस्थाएँ आगे आईं। लॉकडाउन में भी लोगों का स्पिरिट अप था।

इस महामारी के डरावने रूप के दूसरी तरफ मानवता फली-फूली!

धीरे-धीरे कुछ राहत मिली। ऑनलाइन एजुकेशन शुरू हुआ। घर बैठे किराना और दवाईयाँ पहुँचाने के लिए सेवाएँ शुरू की गईं। कई जगहों पर टेली मेडिसिन द्वारा लोगों का इलाज करना शुरू हुआ। वर्क फ्राम होम शुरू हुआ। रुकी हुई दुनिया मानों फिर से चलने लगी। इस महामारी के डरावने रूप के दूसरी तरफ मानवता फली-फूली!

'अटका वहाँ से आगे बढ़ाओ' और 'बिगड़ा वहाँ से सुधारो' को साकार करता यह 'ग्लोबल टीमवर्क' ही कहलाएगा ना!

कुदरत में टीमवर्क

कितने ही जानवर जो कभी स्कूल या कॉलेज में पढ़ने नहीं गए लेकिन फिर भी हम उनके पास से टीमवर्क सीख सकते हैं।

सी ओटर्सः

सी ओटर्स ऐसे समुद्री प्राणी हैं जो मुख्य रूप से ग्रुप में ही देखने को मिलते हैं। वे सोते समय पानी में एक-दूसरे का हाथ पकड़कर ग्रुप बनाते हैं, जिसे "बेड़ा" कहा जाता है। यह "बेड़ा" 2 या 200 से भी ज्यादा ओटर्स एक साथ मिलकर बनाते हैं। जो उन्हें किनारे से दूर एकसाथ रहने में मदद करता है। और जिससे वे पानी में बह जाने या शिकारियों के हाथ लगने से बच जाते हैं।

लंगूर बंदर और चीतल हिरणः

मध्य भारत में, लंगूर बंदर और चीतल हिरण एक-दूसरे के पूरक बनकर जीवन बिताते हैं। हिरण जमीन पर तेजी से दौड़ सकते हैं, जबकि बंदर पेड़ के ऊपर फुर्ती से चढ़ सकते हैं। ये दोनों अपने-अपने कौशल से एक-दूसरे को बाघ और अन्य शिकारियों से बचने में मदद करते हैं।

लंगूर बंदर चपल और तेज़ नज़र वाले होते हैं। वे ऊँचे पेड़ के ऊपर चढ़कर जंगल पर नजर रखते हैं। चीतल हिरण की गंध पहचानने की शक्ति बहुत तेज़ होती है, इसलिए वे ज़मीन पर शिकारियों से सचेत रहते हैं। यदि दोनों में से किसी एक को भी शिकारी के आस-पास होने का आभास होता है तो वे दौड़कर या आवाज़ करके एक-दूसरे को चेतावनी देते हैं। इतना ही नहीं, लंगूर बंदर पेड़ पर से फल तोड़कर नीचे फेंकते हैं, जिससे कि हिरण भी उसे खा सके।

Meercats. (Trust) - मीरकैट्स

मीरकैट्स नाम के गिलहरी जितने छोटे प्राणी एकदम सूखे प्रदेश में रहने के बाद भी अच्छी तरह से सर्वाइव करते हैं जिसका रहस्य है, टीमवर्क। ये प्राणी लगभग 30 के टोले में रहते हैं। वे जमीन खोदकर खाना ढूँढ़ते हैं। यदि जमीन खोदकर सिर डाल कर अंदर जाएँ तो बाहर कोई भी प्राणी या साँप उनका शिकार कर सकता है। इससे बचने के लिए जब मीरकैट्स का झुंड खाने की तलाश करता है, तब बारी-बारी से एक-एक मेम्बर ऊँचे पेड़ या पत्थर पर से निगरानी करता है। और उस दौरान अलग-अलग तरह की आवाज़ें निकाल कर एक-दूसरे को संकेत देते रहते हैं। मतलब कि उनका कम्युनिकेशन चालू ही रहता है। और जब कोई खतरे को टाला नहीं जा सकता तब सभी मीरकैट्स एक-दूसरे के साथ मिलकर बड़ी रचना बनाते हैं और एक-साथ मिलकर उसका सामना करते हैं।

कविता

एक दिन दूध बोला मैंने बनाई चाय...
आग बोली मेरे बिना बनाकर दिखाओ चाय...

बर्तन बोले हमारे बिना कैसे बनेगी चाय?
फिर सब समझकर बोले हमने बनाई चाय...

मतलब इसका कि अकेले हो नहीं सकता कोई भी काम...
अकेले चलते-चलते पहुँच नहीं सकते हम अपने मुकाम...

सफलता वही पचा सकता है जिसे अपनी भूमिका पता है...
और इसके अलावा अन्य सभी साथी संजोगो की कदर है...

निमित्त बनते हैं कल्याण के वे जिन्हें कमिशन चाहिए नहीं...
ज्ञानी जानते हैं कि मान, यश, कीर्ति टिकाऊ होते नहीं...

ज्ञानी पहनते नहीं मान का मुकुट सिर पर अपने...
अपमान पचाकर श्रेय बाँट देते हैं सबको खुले दिल से अपने...

सब साथ मिलकर ही सब के सहयोग से काम होता है...
चार चक्कों से गाड़ी चलती है, मत कहो मेरे कारण ही ऐसा होता है...

दादा के युवाओं द्वारा

मार्च 2022
वर्ष : 9, अंक : 11
अखंड क्रमांक : 107

ज़रूर पढ़े

सितम्बर 2021

For Free download,
visit www.akramyouth.org

Scan Here

Send your suggestions and feedback at: akramyouth@dadabhagwan.org
Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner.
Printed at : Amba Offset, B-99, GIDC, Sector-25, Gandhinagar – 382025.